अध्याय 33

याकूब और एसाव का पुनर्मिलन (भाग 2)

बीस वर्ष के बाद, याकूब का अवश्यंभावी मिलन होने वाला था। यह वह समय था जब वह डर रहा था परन्तु इससे लम्बे समय तक बच न सका। उसके भय के अतिरिक्त, वह अपने भाई के साथ अपने सम्बन्धों को सुधारना चाहता था। इसलिए, वह बड़ी विनम्रता के साथ एसाव के पास पहुँचा, अनिश्चित कि क्या होगा।

याकूब का एसाव के साथ मेल-मिलाप (33:1-11)

[1]और याकूब ने आंखें उठा कर यह देखा, कि एसाव चार सौ पुरुष संग लिए हुए चला जाता है। तब उसने लड़के बालों को अलग अलग बांट कर लिआ, और राहेल, और दोनों लौंडियों को सौंप दिया। [2]और उसने सब के आगे लड़कों समेत लौंडियों को उसके पीछे लड़कों समेत लिआ: को, और सब के पीछे राहेल और यूसुफ़ को रखा, [3]और आप उन सब के आगे बढ़ा, और सात बार भूमि पर गिर के दण्डवत की, और अपने भाई के पास पहुंचा। [4]तब एसाव उससे भेंट करने को दौड़ा, और उसको हृदय से लगा कर, गले से लिपट कर चूमा: फिर वे दोनों रो पड़े। [5]तब उसने आंखें उठा कर स्त्रियों और लड़के बालों को देखा; और पूछा, ये जो तेरे साथ हैं सो कौन हैं? उसने कहा, ये तेरे दास के लड़के हैं, जिन्हें परमेश्वर ने अनुग्रह कर के मुझ को दिया है। [6]तब लड़कों समेत लौंडियों ने निकट आकर दण्डवत की। [7]फिर लड़कों समेत लिआ: निकट आई, और उन्होंने भी दण्डवत की: पीछे यूसुफ़ और राहेल ने भी निकट आकर दण्डवत की। [8]तब उसने पूछा, तेरा यह बड़ा दल जो मुझ को मिला, उसका क्या प्रयोजन है? उसने कहा, यह कि मेरे प्रभु की अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर हो। [9]एसाव ने कहा, हे मेरे भाई, मेरे पास तो बहुत है; जो कुछ तेरा है सो तेरा ही रहे। [10]याकूब ने कहा, नहीं नहीं, यदि तेरा अनुग्रह मुझ पर हो, तो मेरी भेंट ग्रहण कर: क्योंकि मैं ने तेरा दर्शन पाकर, मानो परमेश्वर का दर्शन पाया है, और तू मुझ से प्रसन्न हुआ है। [11]सो यह भेंट, जो तुझे भेजी गई है, ग्रहण कर: क्योंकि परमेश्वर ने मुझ पर अनुग्रह किया है, और मेरे पास बहुत है। जब उसने उस को दबाया, तब उस ने भेंट को ग्रहण किया।

आयतें 1, 2. ज्यों ही कुलपति अपने पुराने घर के पास पहुँचा, उसने **आंखें उठा कर देखा।** जो उसने देखा वह अनिष्टसूचक थाः **एसाव अपने चार सौ पुरुषों को लिए हुए आ रहा था** (देखें 32:6)। एक दिन पहले **याकूब** ने अपने परिवार और पशुओं को दो भागों में बांटा था। यह एक सेना की पैंतरेबाजी थी जिससे उन में से आधे बच सकते थे यदि एसाव उन पर आक्रमण करता और लड़ाई छिड़ जाती (32:7, 8)। इस समय कुलपति ने एक भिन्न पैंतरेबाजी की जो सेना रणनीति पर आधारित नहीं थी। उसने अपने परिवार को तीन समूहों में **बांटा**, प्रत्यक्ष रूप से उनके प्रति स्नेह के विपरीत क्रम में। उसने **दासियों** [उप पत्नियों को], **और उनके बच्चों** को पहले रखा, **लिआ और उसके बच्चों** को दूसरे समूह में और **राहेल और यूसुफ़** को पीछे रखा, होने वाली हिंसा से बचने का उत्तम तरीका।

आयत 3. पीछे रहने की बजाय, याकूब अब **उन सब के आगे बढ़ा**। यह इस बात का संकेत करता है कि वह पिछली रात परमेश्वर के दूत से मल्लयुद्ध करने से जीवन परिवर्तन के अनुभव में से होकर गुज़रा। सम्भवतः एक व्यक्ति नये नाम के साथ, "इस्राएल" ने पुराने भयभीत और चालबाज़ याकूब पर सच में विजय पा ली थी। अपनी पत्नियों के घेरे के पीछे छिपने की बजाय, अब वह राह में सबकी अगुआई कर रहा था। अवस्था के इस मूल बदलाव की इस बात को स्वीकार किया कि एसाव के क्रोध का वह अकेला ही उत्तरदायी था। यदि किसी को इस अपराध के लिए शारीरिक कष्ट भोगना था तो उसे स्वयं ही भोगना चाहिए था उसकी पत्नियों या बच्चों ने नहीं।

ज्यों ही याकूब एसाव के पास पहुँचा, **उसने सात बार भूमि पर गिरके दंडवत की, और अपने भाई के पास पहुंचा**। याकूब ने "भूमि पर गिरकर दण्डवत किया" שָׁחָה *(शाखाह)* और पूरी तरह से एसाव के समाने स्वयं को गिरा दिया, "अपने से बड़ों के सामने अधीनताई की क्रिया के रूप में।"[1] ऐसा उसने एकबार नहीं या दो बार नहीं परन्तु कुल मिलाकर "सात बार" किया। अमरना पत्रों से प्रमाण संकेत करता है कि सात बार झुकने का कार्य श्रद्धा का कार्य था कि वह अपने स्वामी के अधीन है (महान राजा के)।[2]

आयत 4. एसाव का अपने भाई के प्रति हार्दिक अभिवादन उसके घातक व्यवहार के बिलकुल विपरीत खड़ा होता है जो कि कई वर्षों से उसका भाई अलग था (27:41-45)। याकूब निस्संदेह इतने लम्बे समय के बाद अपनी घर वापिसी पर उसके भाई का प्रतिउत्तर क्या होगा उसे नहीं पता था। भयभीत और अनिश्चित कि क्या होगा, उसने पशुओं और भेड़-बकरियों में से बड़ी संख्या में एसाव के लिए उपहार के रूप में अलग किया। क्या वह इन पशुओं को उदारचरित उपहार के रूप में ग्रहण करेगा और एक बार फिर याकूब की ओर कृपादृष्टि करेगा, या क्या अपने भाई की तीव्र प्रतिद्वंद्वता, जिसमें धोखेबाज़ी और चालबाज़ी के घाव समय के साथ साथ भर गए थे? इसका उत्तर दूर नहीं था, क्योंकि एसाव उससे भेंट करने को दौड़ा, और उसको हृदय से लगाया। विडंबना का स्पर्श यहाँ देखा गया हैः ज्यों ही एसाव अपने भाई से मिलने के लिए आया,

याकूब लंगड़ाता हुआ उसकी ओर आया (32:31) कैसा दुखभरा अंत हो गया होता। परन्तु, जब बड़ा भाई उसके (छोटे भाई के) **गले से लिपट कर चूमा**, याकूब जान गया कि एसाव का क्रोध अब नहीं रहा। दोनों क्षमा और मेल-मिलाप के आँसुओं के साथ **रोए**। याकूब ने न केवल परिवर्तित हृदय का अनुभव किया, परन्तु एसाव के साथ भी ऐसा ही हुआ था; और इस पुनःमिलन[3] पर इस तरह के पारिवारिक दृढ़ भावनाओं की अभिव्यक्ति में बदलाव प्रत्यक्ष दिखाई देते थे।

आयत 5. याकूब ने अकेले और अच्छी सेहत में घर छोड़ा था। एसाव ने देखा कि उसका भाई बड़े ठाठ-बाठ से वापिस आ रहा है जिसमें **स्त्रियाँ** [पत्नियाँ] **और बच्चे** थे, परन्तु वह लंगड़ाता हुआ भी चल रहा था। यदि एसाव उससे उसकी कमर में चोट के विषय पूछता, लेखक ने उस वार्तालाप को शामिल नहीं किया; परन्तु, उसने एसाव के प्रश्न का वर्णन किया, **"ये जो तेरे साथ हैं सो कौन हैं?**" कुलपति ने उत्तर दिया, "**ये तेरे दास के लड़के हैं, जिन्हें परमेश्वर ने अनुग्रह करके मुझ को दिया है।**" याकूब ने अपने प्रत्युत्तर ने मात्र लड़कों का ही वर्णन किया। उसने सीधे रूप से पत्नियों का उल्लेख नहीं किया, ताकि एसाव के मन में उसकी बीस वर्ष पुरानी हारान की यात्रा न आए जो कि पत्नी पाने के लिए थी (27:41-28:5)।

जब याकूब ने कहा परमेश्वर ने "अनुग्रह से" उसे लड़के दिए हैं, उसने חָנַן *(चानन)* क्रिया का प्रयोग किया जिसका सम्बन्ध חֵן *(चेन)* संज्ञा से है जिसका अर्थ है "अनुग्रह" या "कृपा" (देखें 32:5)। उसने आशा की थी कि अब एसाव उस पर "कृपादृष्टि" करे जैसे परमेश्वर ने अतीत में उसके साथ व्यवहार किया था। बेशक वे दोनों भाई थे, याकूब ने अपने वार्तालाप में अपने अधीन रवैये को दिखाते हुए स्वयं को "तेरा दास" और एसाव को "मेरे प्रभु" के रूप में दर्शाया (33:5, 8, 13-15)। प्राचीन युग की भाषा में, याकूब के शब्द उस जागीरदार के समान थे जिसने स्वयं को सहमति से एक बड़े शासक के हाथ में कर दिया हो जो फिर उसका स्वामी बन गया हो। यह मृत्युशैय्या आशीष के विपरीत था जो इसहाक ने गलती से अपने छोटे पुत्र पर बीस वर्ष पहले उच्चारित की थी (27:29)। प्राचीन प्रथा के अनुसार, उच्चारित आशीष का कभी भी उलटाव नहीं होता; परन्तु अब याकूब ने इसका खण्डन कर दिया और इसहाक के अधिकार को अपने प्रभु के रूप में स्वीकार कर लिया।

आयतें 6, 7. याकूब ने बड़े ध्यानपूर्वक अपनी पत्नियों और बच्चों के व्यवहार को आयोजित किया जब वे नज़दीक आए और एसाव के सामने झुके। उसके निर्देश को मानते हुए, उसके परिवार के सोलह सदस्य तीन क्रमागत समूहों में सामने आए, उसके लिए उनकी महत्वता के क्रमानुसार नीचे से ऊपर। पहले **दासियाँ** (बिल्हा और जिल्पा), अपने चार **बच्चों** के साथ और **वे झुक गए**। दूसरे में थी **लिआ**: और उसके सात **बच्चे और वे झुक गए**। अन्त में **यूसुफ़ राहेल के साथ आया और वे झुक गए**। जैसा कि आयत 2 में, मात्र यूसुफ़ ही है जिसका कि नाम के साथ वर्णन किया गया, यह इस बात पर ज़ोर देता है कि उस समय तक केवल राहेल का लड़का ही याकूब को प्रिय था। एसाव के सामने दण्डवत करने के द्वारा

सारे परिवार ने दर्शाया कि वे उसे अपना स्वामी स्वीकार करने को तैयार थे। यह ऐसा बिलकुल नहीं था जिसकी बड़े भाई ने अपने छोटे भाई से आशा की थी।

आयत 8. घटनाओं के इस अचानक बदलाव को देखने के बाद, एसाव अब उल्लासपूर्ण भाव में था। उसने याकूब से पूछा, **तेरा यह बड़ा दल** [מַחֲנֶה *(मचानेह)*[4] जानवरों का झुण्ड] **जो मुझ को मिला, उसका क्या प्रयोजन है?** वह पहले ही याकूब के सेवकों से जान चुका था जो भिन्न भिन्न प्रकार जानवर और भेड़ बकरियों के झुण्ड उसके लिए उपहार स्वरूप भेजे गए थे (32:13-21), परन्तु उनकी संख्या और उनका मूल्य इतना अधिक था कि एसाव ने कुछ अतिरिक्त जानकारी प्राप्त करनी चाही। उसके प्रतिउत्तर में, याकूब ने मूल वचनों को ही विस्तारित किया जो उसने अपने सेवकों से एसाव को कहने के लिए कहे थे। **उसने कहा** कि यह उपहार भेजने का प्रयोजन यह था कि मेरे **प्रभु की अनुग्रह की दृष्टि** *[चेन]* **मुझ पर हो**। यह कितने आश्चर्य की बात होगी, इस अवसर पर याकूब का अपने भाई को उत्तर निष्ठवान और निष्कपट था। स्पष्टवादिता पहले कुलपति का लक्षण नहीं था, परन्तु यहाँ उसका यह कथन इस व्यक्ति के सच्चे परिवर्तन को प्रकट करता है जिसने परमेश्वर के दूत के साथ मल्लयुद्ध किया था। याकूब ने इसहाक के साथ धोखा करना नहीं चाहा, परन्तु मात्र यही स्वीकार किया कि उसकी योजना उसके भाई की क्षमा को प्राप्त करने और शान्त करने की उसे और उसके परिवार को हानि हो सकती थी।

आयत 9. मिडल ईस्ट वार्ताओं की ठेठ शैली में, एसाव ने सबसे पहले विनम्रतापूर्वक अपने भाई से पशु और भेड़ बकरियों के झुण्ड के उदारचरित उपहार को लेने से मना कर दिया। उसने इस बात पर ज़ोर दिया और यह कहा याकूब अपना धन अपने पास रखे, **"हे मेरे भाई, मेरे पास तो बहुत है; जो कुछ तेरा है सो तेरा ही रहे।"**

आयत 10. परन्तु **याकूब** अपने लक्ष्य से विचलित नहीं हुआ। उसने कहा, **नहीं नहीं, यदि तेरा अनुग्रह** *[चेन]* **मुझ पर हो, तो मेरी भेंट ग्रहण कर।** याकूब अपने उपहार स्वीकार करने के लिए एसाव पर लगातार दबाव डालता रहा, कारण भी दिया कि उसने एसाव का दर्शन पाकर, मानो **परमेश्वर का दर्शन पाया है**, क्रोध और शत्रुता की दर्शन की बजाय। इस घड़ी में, याकूब को याद आया कि पनीएल में, उसने मल्लयुद्ध में परमेश्वर के चहरे को देखा, और अनुग्रह से उसके प्राण बच गए (32:30)। जैसे अब उसने एसाव के खूंखार चेहरे को देखा, क्रोध और शत्रुता के स्थान पर, उसने एक बार फिर अनुग्रह और क्षमा को देखा। वह अपने भाई को पाकर **प्रसन्न हुआ**।

आयत 11. इसलिए, याकूब ने अपने भाई के सामने अपनी विनती को बार बार दोहरायाः **सो यह भेंट, जो तुझे भेजी गई है, ग्रहण कर: क्योंकि परमेश्वर ने मुझ पर अनुग्रह** *[चानन]* **किया है, और मेरे पास बहुत है।** जबकि शब्द "उपहार" מִנְחָה *(मिन्चाह)* का इस कहानी में याकूब का एसाव के लिए लगातार योगदान प्रयोग किया गया है, यहाँ पर शब्द "उपहार" בְּרָכָה *(बेराकाह)* पाया गया है। इसको शाब्दिक रूप में "आशीष" अनुवाद किया जा सकता है (KJV; NKJV;

ESV)। शैलीगत भिन्नता की बजाय इस शब्दां के बदलाव का सार्थक अर्थ दिखाई देता है। याकूब ने पहले एसाव से मृत्युशैय्या की आशीष को चुरा लिया था (27:27-29, 35, 36, 41), इसलिए अब वह अपने बड़े भाई को उसकी आशीष को लौटाएगा। बीस वर्ष पहले किए गए एसाव के साथ बुरे व्यवहार को अब याकूब सुधार रहा था। जबकि उसने एसाव से खुलकर क्षमा नहीं मांगी, अपनी क्षमा मांगते हुए उसने उसे उपहार (आशीष) दिया उन दोनों की बीच में मेल-मिलाप करने का प्रयास करते हुए।[5]

क्योंकि याकूब ने उसे **दबाया** कि वह अपने भाई के 550 पशुओं के बड़े उपहार को स्वीकार करने के लिए सहमत हो जाए (32:13-15)। इस तरह से, कुलपति अपने बड़े भाई से आग्रह करता रहा जैसे उसने पनीएल में मल्लयुद्ध किया था। जैसे उसने दूत को कहा था, "जब तक तू मुझे आशीर्वाद न दे, तब तक मैं तुझे जाने न दूंगा।" वह एसाव से कह रहा था, "मैं तुम्हें तब तक नहीं जाने दूँगा जब तुम मेरे उपहार को स्वीकार नहीं करोगे।"[6] बिना भेंट के एसाव का उपहार को स्वीकार करना जो किसी के बदले में याकूब के उपहार के इस दृष्टिकोण को प्रकट मानों वह उसके द्वारा किए गलत कामों की भरपाई थी। जबकि लाबान के साथ याकूब के झगड़े का निपटारा अनाक्रण संधि के द्वारा हुआ-बिना कोई वास्तविक मेल-मिलाप के, एसाव के साथ जो गलत हुआ उसके लिए याकूब के द्वारा अपने भाई को उचित पश्चाताप, उत्तम उपहार और अति श्रद्धा की अभिव्यक्ति के द्वारा निश्चित की गई थी।

याकूब और एसाव का अलग होना (33:12-17)

[12]फिर एसाव ने कहा, आ, हम बढ़ चलें: और मैं तेरे आगे आगे चलूंगा। [13]याकूब ने कहा, हे मेरे प्रभु, तू जानता ही है कि मेरे साथ सुकुमार लड़के, और दूध देने हारी भेड़-बकरियां और गायें है; यदि ऐसे पशु एक दिन भी अधिक हांके जाएं, तो सब के सब मर जाएंगे। [14]सो मेरा प्रभु अपने दास के आगे बढ़ जाए, और मैं इन पशुओं की गति के अनुसार, जो मेरे आगे है, और लड़के बालों की गति के अनुसार धीरे धीरे चल कर सेईर में अपने प्रभु के पास पहुंचूंगा। [15]एसाव ने कहा, तो अपने संग वालों में से मैं कई एक तेरे साथ छोड़ जाऊं। उसने कहा, यह क्यों? इतना ही बहुत है, कि मेरे प्रभु की अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर बनी रहे। [16]तब एसाव ने उसी दिन सेईर जाने को अपना मार्ग लिया। [17]और याकूब वहां से कूच कर के सुक्कोत को गया, और वहां अपने लिए एक घर, और पशुओं के लिए झोंपड़े बनाए: इसी कारण उस स्थान का नाम सुक्कोत पड़ा।

आयत 12. प्रत्यक्ष रूप से, **एसाव** ने सोचा कि मेल-मिलाप और सुधारी गई सदभावना लक्षित सेवाभाव और उसी क्षेत्र में याकूब के साथ रहना। उसने कहा, **आ, हम बढ़ चलें: और मै तेरे आगे आगे चलूंगा।** वह अपने भाई को अपने साथ यात्रा करने और स्पष्ट रूप से उसको और उसके परिजनों को सुरक्षा प्रदान करने

का सुझाव दे रहा था। इस सुझाव के साथ एसाव ने एक याकूब के लिए एक नये व्यवहार का संकेत दिया और उसके लिए सहायक होने का प्रयास किया।

आयत 13. जैसे पहले एसाव ने याकूब की भेंट को लेने से इनकार किया, इस बार याकूब ने उनके घर तक यात्रा एक साथ करने के भाई के सुझाव का इनकार कर दिया। भले ही एसाव ने अन्त में अपने मन को बदल लिया था, याकूब अपने इनकार पर अड़ा रहा; परन्तु, उसने ऐसा बहुत ही विनम्र भाव से किया, एसाव को अपना **प्रभु** कहते हुए पुकारा। वह जानता था कि चार सौ शिकारी और योद्धा उनसे अधिक तेज़ी के साथ आगे बढ़ेंगे और चरवाहों और पशुपालकों को उनके घरेलू पशुओं के साथ बहुत पीछे छोड़ देंगे। उसके साथ जाने और उसकी सहायता की इनकारी में याकूब ने स्पष्टीकरण देते हुए एसाव से कहा, **मेरे साथ सुकुमार लड़के** हैं। **दूध देनेहारी भेड़-बकरियाँ और गायें हैं**, उनको धीरे धीरे चलाना है। यदि पशुओं को **तेज़ चलाया**, यहाँ तक **एक दिन** भी, उसे डर था कि कहीं ये **पशु** मर न जाएँ।

आयत 14. इसके साथ, याकूब ने विनम्र वैकल्पिक प्रस्ताव दिया, जिसमें उसने अपनी वार्ता में एसाव को दो बार **प्रभु** कहकर सम्बोधित किया और स्वयं को उसका **दास** कहकर। उसने अपने भाई से विनती की कि वह उसके **आगे आगे निकल जाए** और उसने कहा कि **वह इन पशुओं की गति के अनुसार, जो उसके आगे है, और लड़केबालों की गति के अनुसार धीरे धीरे चलकर सेईर में** अपने प्रभु के पास **पहुंचेगा**। यह बड़ी संदेहजनक बात थी कि याकूब कभी सेईर जाएगा; जहाँ तक विवरण की बात है, उसने ऐसा कभी नहीं किया। उन दोनों भाइयों का मेल इसहाक की मृत्यु पर हुआ, जब वे दोनों अपने पिता को दफ़नाने के लिए हेब्रोन में मकपेला की गुफ़ा पर आए थे (35:27-29)।

उत्पत्ति के लेखक ने इसलिए, पाठकों के लिए इस विवरण में बहुत से अनुत्तरित प्रश्नों को छोड़ दिया। एसाव के साथ सेईर तक यात्रा करने से इनकारी करना याकूब के असली इरादे सम्बन्धित पहली समस्या यह थी। आखिरकार इन वर्षों में, क्या वह अपने भाई पर भरोसा नहीं करता था और उसके आँसू दिखावटी थे? क्या वह यह सोचता था कि चाहे एसाव की क्षमा उचित थी, वह दोबारा विचार कर सकता है और फिर उसकी हत्या कर सकता है? यहाँ तक कि उसका भाई क्षमा करने में निष्ठावान था, क्योंकि यह दोनों व्यक्ति बिलकुल भिन्न थे और कभी एक साथ नहीं चले थे तो इस बात का क्या आश्वासन था कि वे दोबारा झगड़ा नहीं करेंगे? क्या याकूब को यह याद था कि सेईर वह स्थान नहीं था जहाँ परमेश्वर उनको बसाना चाहता था? दोबारा परमेश्वर ने उसे कनान देश उसकी विरासत के रूप में उसे देने की प्रतिज्ञा दी थी (28:13-15; 31:3)। क्या याकूब ने इस कारण से मना कर दिया जैसा वह कनान देश की प्रतिज्ञा के विषय एसाव के पुराने घावों को खोलने से बचता था, जिसमें उसका बड़ा भाई शामिल नहीं था?

दूसरा कारण कि एसाव को दिए गए 550 पशुओं का क्या होगा। क्या एसाव ने अपने उन पशुओं और 400 पुरुषों को ले लिया? यदि ऐसा है तो उन्हें

भी धीरे धीरे यात्रा करनी होगी। तब याकूब की पत्नियों, बच्चों, और पशुओं के दल को कनान देश तक जाने में कोई परेशानी नहीं होगी और 33:14, 15 में उसके इनकार करने का कोई अर्थ नहीं रहा। यदि एसाव अपने पशुओं का बड़ा दल और चरवाहे घर की ओर तेज़ी से यात्रा करने के लिए याकूब के साथ छोड़ जाता फिर उसे या उसके पुरुषों को कनान में जाना पड़ता या याकूब और उसके पुरुषों को उन्हें एसाव को देने के लिए सेईर जाना पड़ता। क्योंकि याकूब भूतकाल में झूठा और धोखेबाज़ रहा है, अब एसाव पशुधन की प्रतिज्ञा के लिए अपने भाई पर भरोसा क्यों करेगा? चाहे याकूब एसाव के पशुओं के साथ यात्रा करे या न करे, उसने अपने भाई के साथ सेईर तक यात्रा करने की प्रतिज्ञा क्यों की जिसे उसने "प्रभु" के रूप में स्वीकार किया था?

जितना हम उत्पत्ति के अंश से बता सकते हैं, याकूब ने ऐसी कोई यात्रा नहीं की और न ही उसका ऐसा कोई इरादा था। इस विनम्रता की संस्कृति में परन्तु निष्ठाहीन मोलभाव में, यह तो बहुत ही असम्भव है कि कुलपति एसाव को दो टूक शब्दों में कहता, "मैं तेरे साथ नहीं जा सकता क्योंकि सेईर मेरा घर नहीं है।" इस तरह का कथन तो बड़े भाई को क्रुद्ध कर देता और उनका मेल-मिलाप खत्म हो जाता, क्योंकि लेखक ने उन प्रश्नों का उत्तर नहीं दिया, तो इसकी कल्पना करना व्यर्थ है। एक सच्चाई तो अवश्य हैः दो भाइयों के बीच में बीस वर्ष बाद मेल-मिलाप होने के बावजूद भी, याकूब अभी भी एसाव से डरता था और उसके साथ चौकसी से व्यवहार करता था। याकूब ने एसाव को उपहार देने, उसे अपना "प्रभु" कहने और स्वयं को उसका "दास" कहने के द्वारा एसाव की "कृपादृष्टि" को पाना चाहा।

आयत 15. एसाव ने अपने भाई के द्वारा दिए गए कारण को स्वीकार कर लिया कि वह उसके साथ सेईर तक यात्रा नहीं कर सकता; परन्तु एसाव ने अपने **कई एक** लोगों को रास्ते में उनकी रक्षा के लिए और मार्गदर्शन के लिए याकूब के साथ **छोड़ना** चाहा। एक बार फिर, याकूब ने एसाव के प्रस्ताव को रक्षकों की ज़रूरत नहीं है कहकर ठुकरा दिया, **ऐसी कोई ज़रूरत नहीं है।** तब उसने फिर उसे अपना **प्रभु** कहकर उसके अनुग्रह की दृष्टि के लिए विनती की।

क्या यह एसाव का भय था या परमेश्वर में विश्वास था कि कुलपति ने अपने भाई के दूसरे प्रस्ताव को ठुकरा दिया? परमेश्वर ने याकूब के साथ रहने ओर उसे सुरक्षित कनान देश में पहुँचाने की प्रतिज्ञा दी थी (28:13-15; 31:3), इसलिए सम्भव है कि याकूब ने किसी अन्य सहायता की ज़रूरत को नहीं समझा। क्योंकि लेखक ने याकूब की मनस्थिति के विषय हमें कोई जानकारी नहीं दी है, इसलिए हम कोई निश्चित निर्णय नहीं कर सकते। यह भय और विश्वास का मिश्रण भी हो सकता है जिसने उसे एसाव और उसके पुरुषों से दूर रहने के निर्णय की ओर अगुआई की हो।

आयत 16. भाई अपनी अपनी अलग अलग राहों पर चले गए; और जितना बाइबल आधारित अंश का सम्बन्ध है, उनका आगामी संक्षिप्त पुनःमिलन मात्र उनके पिता के दफ़नाए जाने पर ही हुआ था (35:27-29)। जबकि उनका

अलगाव दुखद था, ऐसा होना ही था क्योंकि दोनों स्वभाव, विश्वास, जीवन और नियति में बहुत भिन्न थे (इब्रा. 11:20, 21; 12:16, 17)। इसलिए, **एसाव ने उसी दिन सेईर जाने को अपना मार्ग लिया।** उसने और उसके पुरुषों ने निस्संदेह सेईर की ओर अपने कदम वापिस किए, सम्भवतः दक्षिण की ओर यरदन नदी और मृत सागर के पूर्व में।

आयत 17. याकूब, अभी भी यरदन के पूर्व भाग में ही था, नदी के पश्चिम और कनान की ओर मुड़कर **सुक्कोत** को गया, जिसका अर्थ है "पनाह" या "झोपड़ी।" निश्चित स्थान संदेहजनक है, परन्तु 1 राजा 7:46 इस स्थान का पता लगाता है "यरदन की तराई में" "सारतान" के नज़दीक। यहोशू 13:27 सुक्कोत को गादियों के कुल का भाग ठहराता है, जो सिहोन के राज्य का भाग था। कनान पर विजय प्राप्त करने के समय हेश्बोन (यरदन का पूर्वी भाग भी) का इस पर राज था। सुक्कोत में याकूब कुछ समय के लिए बस गया ताकि उसके परिवार को और पशुओं को हारान की लम्बी यात्रा से कुछ आराम मिले। **वहाँ पर उसने अपने लिए घर और पशुओं के लिए झोपड़े** [סֻכֹּת *(सुक्कोथ)*] **बनाए।**

उसका दल सुक्कोत में कितने समय तक रहा यह अज्ञात ही है। कुछ लोग ऐसा सोचते हैं कि वे वहाँ पर कुछ महीने ही रहे, जबकि अन्य लोग सोचते हैं कि वे इससे भी लम्बे समय तक वहाँ रहे। उनके वहाँ रहने की अवधि चाहे कितनी भी रही हो उनका वहाँ पर घर बनाना और झोपड़े बनाना स्थाई रूप से नहीं था क्योंकि वे अभी कनान देश में नहीं पहुँचे थे। अभी भी सुक्कोत यात्रा से थके हुए लोगों और पशुओं के लिए एक विश्राम स्थान ही था और यहीं से यरदन को पार करने का मचान क्षेत्र भी था।

याकूब और उसके परिवार का शकेम नगर की ओर कूच करना (33:18-20)

18और याकूब जो पद्दनराम से आया था, सो कनान देश के शकेम नगर के पास कुशल क्षेम से पहुंच कर नगर के साम्हने डेरे खड़े किए। 19और भूमि के जिस खण्ड पर उसने अपना तम्बू खड़ा किया, उसको उसने शकेम के पिता हमोर के पुत्रों के हाथ से एक सौ कसीतों में मोल लिया। 20और वहां उसने एक वेदी बना कर उसका नाम एलेलोहे इस्राएल रखा।

आयत 18. जब उचित समय आया, **याकूब** और उसके दल ने यरदन नदी को पार किया और पश्चिम दिशा में लगभग 20 मील दूर यात्रा की। वे कुशल क्षेम [शान्ति से[7]], से **शकेम नगर के पास पहुँचे, जो कनान देश में था।** तब उन्होंने नगर के साम्हने अपने डेरे खड़े किए। सम्भवतः कुलपति के शान्तिपूर्वक कनान में पहुँचने और शकेम में बसने का लेखक के द्वारा विवरण देने का उद्देश्य इस बात को प्रकट करना हो कि परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना का उत्तर दिया (28:21)।

याकूब के कनान में प्रवेश करने के इस विवरण में एक दिलचस्प समानता

देखी गई है: यह बहुत वर्ष पहले हारान से आए अब्राहम के आगमन की याद ताज़ा करती है। हम नहीं जानते कि अब्राहम ने कहाँ से यरदन नदी को पार किया; परन्तु उसके पहले ठहराव शकेम का वर्णन किया गया है और वहाँ उसने एक वेदी बनाई थी (12:6, 7)। याकूब भी वही करेगा (33:20)।

आयत 19. अपने पोते के विपरीत, अब्राहम ने ज़मीन खरीदने के लिए कई वर्ष प्रतीक्षा की; और उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि उसे सारा की देह को दफ़नाने की ज़रूरत थी (23:17-20)। परन्त याकूब, शकेम के नज़दीक ठहर गया और तुरन्त **उसने ज़मीन खरीदी और वहाँ अपने डेरे खड़े किए**।

याकूब ने शकेम **के पिता हमोर से यह ज़मीन एक सौ कसीतों** קְשִׂיטָה *(केसीटाह)* **में मोल ली थी**। क्योंकि इस धन (सम्भवत चाँदी) का मूल्य का [निर्धारण[8]] नहीं हो सकता, उस ज़मीन का मूल्य क्या हो सकता है इसे जानने का हमारे पास कोई उपाय नहीं है। परन्तु, याकूब के परिवार के लिए इसकी कीमत मौद्रिक मूल्य से कहीं बढ़कर थी। जिस व्यक्ति ने अपनी ज़मीन याकूब को बेची थी हित्ती लोग थे और परमेश्वर के लोगों को उनसे दूरी बनाकर रखनी चाहिए थी। (हमोर और शकेम का सामना अध्याय 34 में होगा।) हालांकि यह विवरण कुलपति के द्वारा खोदे गए कुएँ का कोई उल्लेख नहीं करता है, नया नियम ऐसा करने की यूहन्ना 4:5, 6 में पुष्टि करता है।

आयत 20. तब जैसा अब्राहम ने किया वैसा ही याकूब ने **एक वेदी बनाई**। उसने **उसका नाम एलेलोहे-इस्राएल** रखा, जिसका अर्थ है "परमेश्वर, इस्राएल [याकूब] का परमेश्वर।" इस तरह से, कुलपति ने स्वीकार किया जिस परमेश्वर के साथ उसने पनीएल में मल्लयुद्ध किया था, और जिसने उसका नाम "इस्राएल" बदला था अब वह उसका परमेश्वर है।

अनुप्रयोग

भाइयों का मेल-मिलाप (33:1-17)

दो भाइयों के मिलन का यह अध्याय एक उत्कृष्ट उदाहरण देता है कि बाइबल आधारित विद्वान उसी कहानी को पढ़ सकते हैं और फिर भी वे भिन्न निष्कर्ष निकालते हैं। कुछ एसाव की उदारवादी, कृपालु और क्षमा करने वाले व्यक्ति के रूप में प्रशंसा करते हैं जिसका मुख याकूब की इस भेंट में "परमेश्वर के मुख" समान था (33:10)। इसके विपरीत, परन्तु याकूब को स्वार्थी और धोखेबाज़ के रूप में ताड़ना करने के उनके पास इसके अलावा कुछ नहीं जिसने अपनी रक्षा के लिए अपनी दासियों, पत्नियों और बच्चों और विशेष रूप से एसाव के साथ चालाकी की। अन्य समीक्षक इन व्यक्तियों का इसके विपरीत मूल्यांकन करते हैं। सच्चाई कहीं न कहीं विरोधी विचारों के बीच रहती है, परन्तु परमेश्वर ने अपनी कृपा से (रोमियों 8:28) उनके स्वेच्छा विकल्पों के द्वारा याकूब और उसके वंश को बचाने का कार्य किया और अन्ततः सारे जगत के लिए आशीष लाता है (28:13, 14)।

परमेश्वर विश्वास के लोगों और उनके बीच जिनमें विश्वास की कमी है मेल-मिलाप कर सकता है। इस 33 अध्याय का पहला भाग उस व्यवहार को बताता है जिसमें याकूब अपने भाई एसाव से मिलता है जिसके विषय इब्रानियों का लेखक बाद में "अनैतिक" और "अधर्मी व्यक्ति" के रूप में वर्णन किया है (इब्रा. 12:16)। याकूब का अपने आप में धर्मी चरित्र नहीं था; वह झूठा था। उसने एसाव और अपने पिता के साथ गलत किया और धोखा किया (25:22-34; 27:1-41), और बीस वर्ष तक बड़े भाई ने अपने अन्दर घृणा रखी और छोटे भाई की हत्या करने की इच्छा रखी। इसलिए जब उसने सुना कि याकूब अपने पशुओं, भेड़-बकरियों और बहुत से दासों के साथ वापिस घर आ रहा है, उसने स्वाभाविक रूप से सोचा होगा कि उसके यह दास भी योद्धा होंगे (देखें 14:14, 15), और लड़ाई हो सकती है। उसने अपने साथ 400 पुरुषों ले जाने का निर्णय किया (33:1) जो उसके अपने योद्धा थे, स्पष्ट रूप से अपने भाई की हत्या करने और उसकी सारी सम्पति लेने की योजना के साथ आए थे।

वास्तव में, याकूब लड़ाई नहीं चाहता था। जब उसने सुना कि एसाव अपने चार सौ पुरुषों के लिए हुए उसकी ओर आ रहा है, उसने अपनी महत्वता के क्रमानुसार अपने बच्चों, पत्नियों को समूहों में बांटा। उसने अपनी दो उपपत्नियों और उनके बच्चों को सबसे आगे रखा, जबकि लिआ और उसके बच्चों को दूसरी पारी में रखा और उसने अपनी प्रिय पत्नी और पुत्र को सबसे पीछे रखा ताकि इनके पास परिवार के अन्य सदस्यों से बचाव का बेहतर उपाय हो। निस्संदेह, इससे परिवार के अधिकांश लोगों को बहुत दुख पहुँचा होगा जब उन्होंने देखा किसको याकूब ने उनको परमआवश्यक माना है। जिस तरह से याकूब ने यूसुफ़ की रक्षा के लिए उसके भाइयों को क्रम में रखा सम्भवतः उससे उनके हृदयों में ईर्ष्या और जलन लम्बे समय तक रही जो उनको उसे दास होने के लिए बेचने की ओर ले गई (37:1-36)।

ज्यों ही एसाव अपने योद्धाओं के साथ आगे बढ़ा, उसे याकूब और उसके परिवार के रक्षकों के साथ मुकाबला होने की आशा था। कोई संदेह नहीं उसने समझ लिया कि उसके भाई के चरवाहे योद्धा लड़ाई के लिए तैयार होंगे। उसको बड़ी हैरानी हुई, याकूब सबसे पहले आया। वह निहत्था या बिना किसी रक्षक के उसकी ओर आया और एसाव के सामने सात बार धरती पर झुका। अपने छोटे भाई से इस तरह के श्रद्धाभाव व्यवहार को होना एसाव के लिए हैरानी की बात थी। इन क्रियाओं के आधार पर, उसने विश्वास किया कि याकूब बदल गया है और अब वह पहले वाला व्यक्ति नहीं रहा है जिससे वह बीस वर्ष से घृणा करता आ रहा था। एसाव याकूब से मिलने के लिए दौड़ा। उसने उसका गले लगाकर अभिनन्दन किया, उसके गले लगाया और उसे चूमा। वर्षों के क्रोध, दुश्मनी और उत्कंठा के बाद, उन दोनों ने मिलाप के आँसू बहाए।

यह तो प्रत्यक्ष है कि परमेश्वर ने इन दोनों व्यक्तियों के जीवनों में इन वर्षों के दौरान कार्य किया और उन्हें अहम सबक सिखाए। याकूब अब जान गया कि प्रसन्नता और भलाई झूठ, धोखे और चालबाज़ी से नहीं आती हैं। इस तरह के

व्यवहार और कार्य मात्र दुख, नाराज़गी और घृणा के बीज को ही बोते हैं, यहाँ तक परिवार में भी। याकूब ने स्वयं को लाबान में देखा होगा और एसाव और इसहाक के विरोध में किए गए पाप के प्रति दुखी हो रहा होगा जैसे उसके ससुर ने भी उसके साथ उसी तरह का दुर्व्यवहार किया था। लाबान के हानिकारक कार्यों ने उसके दामाद को उससे अलग कर दिया और उसकी पुत्रियाँ उसके विरुद्ध हो गईं। वह हाल ही में हारान से कड़वे, लोभी व्यक्ति के रूप में आया था। उसकी धोखेबाज़ी की उसे विपुल सम्पत्ति की कीमत चुकानी पड़ी और उसके परिवार में सदा के लिए फूट पड़ गई।

याकूब जानता था कि लाबान के पतन में, उसके दामाद के जानवरों की संख्या के कम रखने की योजना को ताकि वह निर्बल रहे और कनान को न जा सके इन सबको विफल करने में परमेश्वर का हाथ था। जबकि लाबान के जानवरों की संख्या कम होने, परमेश्वर ने याकूब के जानवरों को आशीषित किया और बढ़ाया और उसे धनी किया ताकि वह प्रतिज्ञा के देश में वापिस जा सके और वहाँ पर अपने परिवार की देखभाल कर सके (31:3-13)। इसके साथ ही साथ, परमेश्वर ने यब्बोक नदी पर याकूब के हृदय में कार्य किया। यह जानते हुए कि एसाव अपने चार सौ पुरुषों के साथ उसको उसकी धोखेबाज़ी, लोभ और चालबाज़ी के पापों का दण्ड देने के लिए मार्ग पर है, याकूब आशीष पाने के लिए अतिसाहसिक था जैसे उसने परमेश्वर के दूत के साथ मल्लयुद्ध किया (32:24-31)। एसाव के साथ सम्बन्ध सुधारने के लिए उसके हृदय में एक बदलाव की उसे ज़रूरत थी। जिस तरह से उसने उसे दुख पहुँचाया था और उसके पहलौठे का अधिकार और उसकी आशीष को छीनने के लिए उदारचरित क्षतिपूर्ति करने के द्वारा अपनी विनम्रता और दुख को दर्शाने के लिए इतना ही कर सका।

कुछ समीक्षक अभी भी यहाँ पुराने याकूब को देखते हैं; वह उसके इन कार्यों की पाखण्ड के रूप में ही व्याख्या करते हैं एक बार फिर एसाव को धोखा देने का ढंग, ताकि उसका भाई उसके प्राण पर अपनी दया करे। परमेश्वर के वचन के विद्यार्थियों को याकूब के कार्यों की आलोचना करने के प्रति चौकन्ना रहना चाहिए क्योंकि मात्र परमेश्वर ही किसी व्यक्ति के हृदय को जानता है। निश्चित ही, कुलपति का अपने भाई के प्रति अच्छा व्यवहार या हार्दिक भावनाएँ नहीं थीं। क्या परमेश्वर इस तरह की मांग करता है कि उसके लोग सार्थक भावनाओं की प्रतीक्षा करें इससे पहले कि वे उन लोगों के साथ अपने सम्बन्ध सुधार जिनको उन्होंने दुख दिया है? यदि परमेश्वर अपने लोगों से इस तरह मांग करता है तो कुछ ही लोग होंगे जो अपने सम्बन्धों को सुधार सकेंगे जिन्होंने अपने स्वार्थ के द्वारा उनको दूषित किया है। याकूब ने एसाव के लिए 550 पशुओं का अति उदारचित उपहार तैयार किया। आगे चलकर, यह छोटे भाई का अपने बड़े भाई के सामने सात बार झुकना और उसे "प्रभु" कहकर सम्बोधित करना विनम्रता का अनुभव था परन्तु सम्बन्धों को सुधारने के लिए ऐसा करना आवश्यक था। यह ठीक रीति से है क्योंकि परमेश्वर भावनाओं के स्थान पर कार्यों की आज्ञा देता है। वह जो भला महसूस करने की यह कहते हुए प्रतीक्षा करता है, "मुझे क्षमा करें,"

मुझे ऐसा कभी नहीं करना चाहिए था। अहंकार हमेशा बीच में आता है।

समय की एक प्रक्रिया पर, परमेश्वर चाहता कि उसके लोग उसकी पवित्रता और धार्मिकता के प्रतिरूप में ढलते जाएँ। वह चाहता उसके दास सभी लोगां के प्रति प्रेम में कार्य करें जैसा वह करता है (यूहन्ना 3:16; 2 कुरि. 3:17, 18; 1 यूहन्ना 4:7-11)। सम्पूर्ण बाइबल में, प्रेम को एक क्रिया के रूप में देखा गया है जिसका परमेश्वर के लोगों को अपने पड़ोसियों, अजनबियों (आस-पास के रहनेवाले), और विरोधियों के प्रति क्रिया में लाना था - इसकी परवाह किए बिना कि वह इनके विषय व्यक्तिगरूप से क्या महसूस करते हैं। इस्राएलियों को कुछ प्रथाओं से दूर रहने की आज्ञा दी गई थी, उनके झुकाव होने के बावजूद भी। पवित्रता का नियम अनिवार्य था कि वे अपने पड़ोसी पर “अन्धेर न करना, और न लूट लेना” (लैव्य. 19:13), और “बहरे को शाप न देना, और न अन्धे के आगे ठोकर रखना” (लैव्य. 19:14), उनको “न्याय करने में कुटिलता नहीं करनी थी” और न “कंगाल का पक्ष करना था” न ही उनको “मुँह देखकर विचार करना था” (लैव्य. 19:15)। इसके अतिरिक्त उनको “लतूरा बनके अपने लोगों में फिरने के लिए” या “पड़ोसी” का लहू बहाने की यक्ति करने के लिए मना किया था (लैव्य. 19:16)। उनको किसी भी बदला नहीं लेना था या किसी से बैर नहीं रखना था। इन नियमों का लैव्यव्यवस्था 19:18 के अभिवचन में सारांश प्रस्तुत किया हैः “एक दूसरे से अपने समान प्रेम रखना; मैं यहोवा हूं।” पवित्रशास्त्र के उस भाग के अन्त में, परमेश्वर ने अपने संगी साथी के साथ व्यवहार करने के स्पष्ट निर्देश दिए हैं (גֵּר, *गेर*, कोई अन्यजाति या कोई “पराया”) प्रतिज्ञा के देश में इस्राएलियो के संग। उनको उनके साथ कुछ भी बुरा व्यवहार नहीं करना था, परमेश्वर ने कहा, अपने जाति भाइयों समान उनके साथ व्यवहार करो और उससे अपने समान प्रेम करो (लैव्य. 19:33, 34)।

नया नियम में, पौलुस ने रोम के मसीहियों को विनती की कि वे इस संसार के समान न बनें; इसके बजाय उनको अपने मन के नये हो जाने से आत्मा में नये होते रहना चाहिए। उनको भली भावनाओं के स्थान पर दिव्य कार्य करने थे (रोमियों 12:2)। उसने उन्हें भाईचारे के प्रेम से एक दूसरे के साथ व्यवहार करने के लिए चेताया (रोमियों 12:10) और “बुराई के बदले किसी से बुराई नहीं करनी” (रोमियों 12:17)। जहाँ तक हो सके सबके साथ मेल-मिलाप रखना (रोमियों 12:18) और इसमें बैरियों को खाना खिलाना भी शामिल है (रोमियों 12:20, 21)। यीशु ने “पहाड़ी उपदेश” में इसी के अनुरूप सिद्धान्त सिखाए (मत्ती 5:43-48) और अपने “मैदानी उपदेश” में भी (लूका 6:27-36)। परमेश्वर के लोगों को जो सही है वह करने के लिए बाइबल अमिश्रित इरादों या भली-भावनाओं की मांग नहीं करती है। परमेश्वर अपने लोगों को अच्छा व्यवहार करने के लिए कहा है।

परमेश्वर ने एसाव के हृदय में भी अपनी कृपा से उसकी घृणा दूर करने और बदला लेने की कड़ी इच्छा को हटाने के लिए कार्य किया। जब उसने देखा कि याकूब अधीनता का कार्य करते हुए उसकी ओर आ रहा है, सात बार उसके

सामने झुकते हुए, वह जान गया कि उसका भाई उसके उस प्रभुत्व की घोषणा कर रहा है जो उसने पहलौठे की आशीष को चुराकर अपना कर लिया था (27:29)। याकूब ने एसाव के सामने स्वयं को दीन किया उस संदेश की पुष्टि की जो उसने याकूब के दल के पास उसके पहुँचने से पहले अपने सेवकों के द्वारा उसे दिया था। उन्होंने कहा था याकूब एसाव का दास और एसाव, उसके प्रभु की दृष्टि में अनुग्रह पाने के लिए यह पशु भेजता है। सम्भवतः याकूब को भी यह आशा थी कि एसाव इस बड़ी संख्या में पशुओं को एक अतिरिक्त विरासत के भाग की वापिसी को भुगतान के रूप में देखेगा जो उसने धोखे से एक कटोरी दाल के बदले में उससे खरीद ली थी (32:13-20)।

यहाँ तक कि इब्रानियों के लेखक ने एसाव को "व्यभिचारी" और "अधर्मी व्यक्ति" के रूप में वर्णन किया (इब्रा. 12:16) जिसने अपने भाई से घृणा की, अभी भी उसमें क्षमा करने की और उस पर कृपा करने की क्षमता थी। याकूब के कार्य भय और अपराध बोध से उत्पन्न थे, परन्तु उसके आँसू सच्चे थे। एसाव को भरोसा हो गया था कि उसके भाई ने उससे अपने किए हुए की सच्ची क्षमा मांगी है और फिर से सम्बन्ध बनाने का प्रयास कर रहा है। जब याकूब ने एसाव के चेहरे को देखा, उसने चेहरे पर अनुग्रह और क्षमा देखी "परमेश्वर का मुख" (33:10)। हृदय स्पर्शी दृश्य में, वे आपस में गले लगे, रोए और फिर से भाइयों की तरह मेल-मिलाप किया। काफ़ी विनती करने के बाद, एसाव ने अन्त में याकूब के पशुओं की अच्छी भेंट को सम्बन्धों के सुधरने के चिन्ह के रूप में ले लिया (32:13-15; 33:11)। अब जो बाकी रह गया था वह दोनों भाइयों का घर वापिस आना था।

परमेश्वर वास्तविक मेल-मिलाप को ला सकता है भले ही वह आदर्शस्वरूप न हो। एसाव अपने भाई से मिलने के बाद शान्ति से वापिस जाने को तैयार था। उसने याकूब को अपने घर सेईर में आने के लिए कहा (33:12)। याकूब ने एसाव के प्रस्ताव को ठुकरा दिया, क्योंकि उसके छोटे बच्चे निर्बल थे और उसके दुधारू पशु एसाव के पुरुषों के संग नहीं चल सकते थे। उसने एसाव को उत्साहित किया कि वह अपने पुरुषों के साथ आगे आगे जाए और कहा उसका दल धीरे धीरे यात्रा करेगा और उसकी ओर सेईर में आएगा (33:14)। एसाव ने इस प्रस्ताव के द्वारा ज़ोर डाला के वह अपने कुछ पुरुष पीछे छोड़ देगा, याकूब के परिवार को सेईर तक सुरक्षा देने के लिए और मार्गदर्शन करने के लिए; परन्तु याकूब ने इस प्रस्ताव से भी इनकार कर दिया और उससे बिना सुरक्षा के दल को यात्रा करने की अनुमति देने की विनती की (33:15)।

एसाव ने अपने प्रस्ताव पर ज़ोर क्यों दिया, और याकूब ने क्यों दो बार उसके प्रस्ताव को ठुकरा दिया? इसका उत्तर अस्पष्ट है। क्या याकूब ने सेईर की ओर यात्रा करने के विषय झूठ बोला? इस यात्रा को करने के उसके विचार या प्रयास के विषय हम उत्पत्ति में आगामी कोई भी प्रमाण नहीं मिलता है। उसको भय होगा कि कहीं एसाव फिर से विचार न करे और विशेषकर यदि उनके बीच में कोई नया विवाद आ गया तो उसको अभी भी मारने का प्रयास करे। जितना

हम कहानी से जानते हैं, कई वर्षों तक यह दोनों भाई आपस में कभी नहीं मिले उससे पहले कि जब वे हेब्रोन में अपनी पिता इसहाक को दफ़नाने के लिए एकत्र हुए थे (35:29)।

यह सारा विवरण व्याख्याकारियों के मन में प्रश्न खड़े करता हैः क्या याकूब का मनपरिवर्तन वास्तविक था जब उसने परमेश्वर के दूत के साथ मल्लयुद्ध किया और उसे नये नाम की आशीष मिली थी? क्या याकूब की पशुओं की उदारचरित भेंट और एसाव की भेंट स्वीकार करने की झिझक यह सारी कहानी मात्र धोखा या सांस्कृतिक विनम्रता थी? क्या दोनों ही व्यक्ति मेल-मिलाप की भावनाओं में गए, क्योंकि एक दूसरे के प्रति भय या शत्रुता को ढका? जबकि कई समीक्षक इस तरह की प्रबल शब्दावली में इन प्रश्नों को अभिव्यक्त नहीं करते, कुछ अर्थ निकालते हैं कि उन में से एक या दोनों ही व्यक्ति अपने शब्दों में या क्रियाओं में कहीं न कहीं कपटी थे।

यह कहना भी व्यर्थ की बात होगी कि यब्बोक नदी पर परमेश्वर के दूत के साथ मल्लयुद्ध याकूब का अनुभव सच्चा मनपरिवर्तन नहीं था, यहाँ तक कि यदि वह एसाव से अगले दिन सेईर में आने के विषय में झूठ बोला। चाहे याकूब शारीरिक रूप से परिपक्व व्यक्ति था, आत्मिक रूप से वह एक बच्चे के समान ही था जो अपने पहले कदम के साथ चलना सीख रहा था। बच्चा होने के नाते ऐसा होना ही था, वह गिरा; परन्तु परमेश्वर ने उसे उठाया (भजन 37:23, 24) और उसके जीवन में आत्मिक बल को विकसित करने के लिए कार्य किया, जैसा कि परमेश्वर अपने सभी लोगों के जीवन में करता है।

विश्वास में आरम्भिक आचरण का अर्थ यह नहीं होता कि कोई व्यक्ति कभी भी प्रलोभन में नहीं फंसेगा, या इसका अर्थ यह भी नहीं कि वह कभी पाप नहीं करेगा। यूहन्ना ने 1 यूहन्ना 3:9 में लिखा, "कोई भी व्यक्ति जो परमेश्वर से जनमा है वह पाप नहीं करता।" इस आयत के दूसरे आधे भाग में, प्रेरित की मसीही लोगों के लिए एक चुनौती है "वह पाप नहीं करता" (NIV[9])। अन्य शब्दों में, बदले हुए जीवन में पाप नहीं रहता।

याकूब एक तरह की परमेश्वर को जानने की यात्रा पर था। उसने बेतेल में परमेश्वर की ओर पहला कदम बढ़ाया, जब यहोवा ने स्वयं को स्वप्न में उस पर प्रकट किया और उसी प्रतिज्ञाओं को दोहराया जो उसने अब्राहम और इसहाक से की थीं। परमेश्वर ने कुलपति को आश्वासन दिया कि वह उसके साथ रहेगा और उसको कनान देश में सुरक्षित वापिस लाएगा (28:13-15)। याकूब का प्रतिउत्तर एक सर्शत वाचा थी कि यहोवा उसका परमेश्वर होगा यदि वह अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करता है (28:20-22)। स्पष्ट रूप से, याकूब ने कई वर्षों तक परमेश्वर के विषय नहीं सोचा था, जब तक कि वह कनान देश को वापिस नहीं आया था और उसने सुना कि एसाव उससे मिलने के लिए अपने चार सौ पुरुषों के संग आर रहा। तब पहली बार, बाइबल अंश बताता है कि याकूब ने परमेश्वर से प्रार्थना की (32:9-12), उस रात बाद में, कुलपति का परमेश्वर के दूत के साथ मल्लयुद्ध मुकाबला हुआ। वे लगभग सूर्य निकलने तक मल्लयुद्ध करते रहे। याकूब तब तक

उस दिव्य अजनबी को छोड़ने के लिए तैयार नहीं था जब तक कि वह उसे आशीष न दे। उसे नया नाम "इस्राएल" देने के द्वारा उसने अन्त में वही किया (32:22-29)। अचानक ही, याकूब ने इस अजनबी को एक नये रूप में देखाः उसने उसे अनुग्रहकारी और परमेश्वर के क्षमा करने वाले चेहरे को देखा (32:30; देखें 33:10)।

नया नियम के समय में, प्रत्येक व्यक्ति के मन परिवर्तन की अनोखी कहानी तारसुस के शाऊल की तरह नहीं थी, जिसे दमिश्क की राह पर जी उठा प्रभु यीशु मिला था। यीशु के साथ मिलने की एक ही घटना ने शाऊल के जीवन को पूरी तरह से बदल दिया। इसने उसे एक भिन्न आत्मिक राह पर चला दिया और वह यीशु मसीह का महान मिशनरी बन गया जिसके समान अभी संसार में किसी को नहीं देखा गया (प्रेरितों. 26:9-20)। पिछले 2000 वर्षों में परमेश्वर के अधिकांश लोग कम शानदार तरीके से उसके पास आए। कुछ आरम्भिक शिष्यों के समान, लोग बड़े बड़े प्रचारकों की साक्षी के द्वारा यीशु का अनुसरण करने के लिए आ सकते हैं। अन्य लोग अपने परिवार के सदस्यों या मित्रों के द्वारा जो यीशु के शिष्य हैं परमेश्वर की खींचने वाली सामर्थ से भेंट करते हैं। भले ही कोई व्यक्ति कैसे प्रभु का जानता है, उसका जीवन बदलना आरम्भ हो जाता है। बदलाव एक ही बार में सम्पूर्ण नहीं हो जाता। परमेश्वर में विश्वास के नियमित विकास में एक मसीही का सारा जीवन लग जाता है।

जैसा कि याकूब के साथ हुआ, प्रभु यीशु के आरंभिक चेले भी कभी कभी अपनी आत्मिक परिपक्वता में आगे बढ़ने की बजाय पीछे हट गए। कुछ अवसरों पर यीशु को उनके विश्वास की घटी के कारण उन्हें डाँटना पड़ा। जबकि पतरस को चेला बने लगभग तीन वर्ष बीत चुके थे, फिर भी, यीशु को मिले धोखे की रात को, उसे प्रभु की ओर और अधिक "बदलने" की आवश्यकता थी (लूका 22:32; KJV)।[10] प्रभु यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने और पुनरुत्थान के बाद ही चेलों का विश्वास इतना बढ़ सका कि वे इस सुसमाचार का कि यीशु कौन है और मानवजाति के उद्धार के लिए उन्होंने क्या पूरा के दिया है, प्रचार कर सकें। जब तक कि प्रभु का स्वर्गारोहण और पिन्तेकुस्त के दिन प्रेरितों को पवित्र आत्मा प्राप्त नहीं हो गया (यहून्ना 14:26; 16:13; प्रेरितों 2:1-11) तब तक उनके जीवन पूर्णतया नहीं बदले थे। उस पल के बाद से, वे सुसमाचार को "सारे देशों" में ले जाने लगे (मत्ती 28:16-20; लूका 24:46-49; प्रेरितों 1:3-11; 2:22-41)।

आज भी परमेश्वर के लोगों के साथ ऐसा ही है। जो भी विश्वास, पश्चाताप. और बपतिस्मे के द्वारा परमेश्वर की सन्तान बन जाते हैं वे सब "पानी और आत्मा से जन्मे हैं" (यूहन्ना 3:3-5; प्रेरितों 2:38)। नए मसीहियों को मसीह में शिशु कहा गया है और उन के लिए "निर्मल आत्मिक दूध की लालसा रखने" का निर्देश दिया गया है जिससे कि वे "उद्धार पाने के लिए बढ़ते जाएं" (1 पतरस 2:2)। आत्मिक विकास की यह प्रक्रिया सारी उम्र चलती रहनी चाहिए; यह मसीह की समानता में ढलते जाना है जिसमें उसके गुणों में परिपक्व होते जाना भी सम्मिलित है (रोमियों 8:1-14; 12:1-3; 2 कुरि. 3:17, 18; इफि. 4:1-16;

2 पतरस 1:1-11)। ऐसा कोई परिवर्तन तुरंत या सरलता से नहीं आती।

शारीरिक आयु चाहे जो भी हो, मसीही कभी कभी अपरिपक्व होकर पाप भी कर सकते हैं; लेकिन पाप कर जाना उनका कोई नियमित कार्य अथवा जीवनशैली नहीं है। यद्यपि वह चार पत्नियों और बारह बच्चों वाला पुरुष था, याकूब का बदलना यब्बोक नदी के किनारे पर आरंभ हुआ, जब उसने परमेश्वर के दूत के साथ मल्ल्युद्ध किया और आशीष प्राप्त की। उसका परिवर्तन वास्तविक था, परन्तु उसने वह स्थान एक आत्मिक शिशु के समान छोड़ा, आत्मिक तथा शारीरिक रूप में लंगड़ाते हुए। हमें अचंभित नहीं होना चाहिए कि परमेश्वर जो चाहता था कि वह बने और करे, वह उससे कमतर रहा।

पतरस, जो यीशु के निकटतम चेलों में से एक था, के साथ भी महायाजक के आंगन में ऐसी ही समस्या थी जब उसने यीशु का चेला होने से इन्कार किया (लूका 22:54-62; यूहन्ना 18:15-27)। आगे चलकर, वह आत्मिकता में परिपक्व हो गया; अन्ततः उसका देहान्त जीवित विश्वास में जयवन्त स्थिति में हुआ, जैसा कि याकूब के साथ हुआ था (उत्पत्ति 48; 49)। आज भी परमेश्वर की अक्षय विरासत की प्रतिज्ञा उन सभी के लिए है जो प्रभु के विश्वासी हैं (2 तिमु. 4:7, 8; 1 पतरस 1:3-5; 2 पतरस 1:2-4; 3:11-13; प्रका. 14:13)। हमें अपनी कमज़ोरियों के कारण हताश नहीं होना चाहिए, लेकिन हमें स्मरण रखना चाहिए कि हमारा "विश्वासी" होने का अर्थ "बिना किसी भी दोष के होना" नहीं है। मसीही जीवन से तात्पर्य है: "पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं; और उसके पुत्र यीशु का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है" (1 यूहन्ना 1:7)।

समाप्ति नोट्स

[1]एडविन यमाऊची, "חָנָה," *TWOT* में 1:268. [2]डब्लयू. एफ. एल्बराईट, ट्रांस., "दि अमरना लैटरस," इन *ऐंशियंट नीअर ईस्टर्न टैक्टस रिलेटिंग टू दि ओलड टैस्टामेंट*, 3डी इडी., इडी. जेम्स बी. प्रीचार्ड (प्रिंसटोन, एन.जे.: प्रिंसटोन यूनिवर्सिटी प्रैस, 1969), 483-85 (nos. 137, 234, 244, 250)। [3]मिलन के इसी प्रकार की भावनाएँ उत्पत्ति में पाई जाती हैं, जिसमें भागना, गले लगाना, चूमना और रोना शामिल है (24:17, 29; 29:11-13; 45:14, 15; 46:29; 48:10)। [4]देखें 32:3 जहाँ מָחֲנֶה *(मचानेह)* का अर्थ सेना "छावनी" या "दल" होता है। यहाँ इसका अर्थ पशुओं का दल (देखें NCV; CEV; NLT)। [5]विक्टर पी. हैमिल्टन, *दि बुक ऑफ जेनेसिसः चैप्टर 18-50*, दि न्यू इंटरनेशनल कमैंट्री ऑन दि ओलड टैस्टामेंट (ग्रेंड रेपिडस, मिशिगन: डब्ल्यूएम. बी. एर्डमैनस पबलिशिंग कम्पनी, 1995), 346. [6]पूर्वोक्त। [7]अंग्रेजी के अधिकांश संस्करणों के अनुसार अनुवादित शब्द "कुशल क्षेम" या "शान्तिपूर्वक" שָׁלֵם *(शालेम)* उस तरीके का वर्णन करता है जिससे याकूब शकेम में प्रवेश हुआ। एक अन्य सम्भावना यह है कि यह शकेम के नजदकी नगर ("शालेम" या "सालेम") के नाम का उल्लेख करता है। इसको कई प्राचीन संस्करणों (सैप्टाजेंट; सिरिएक; वुल्गेट) के साथ ही साथ केजेवी का समर्थन है। प्राचीन नगर का नाम "शालेम" या "सालेम" शकेम के पूर्व में लगभग चार मील की दूरी पर स्थित था। (हॉवर्ड एफ. वोस, "सालेम," *दि इंटरनेशनल स्टैंडर्ड बाइबल इनसाइकलोपीडिया* में, रिवा. एड., एड. जैफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले [ग्रैंड रेपिडस, मिशिगन: डब्ल्यूएमत्र बी. एर्डमैनस पबलिशिंग कम्पनी, 1988], 4:285.) [8]शब्द *(केसीटाह)*

पुराना नियम में मात्र दो स्थानों पर दिखाई देता है (यहोशू 24:32; अय्यूब 42:11), जो बताता है कि इसका अर्थ इतना अस्पष्ट क्यों है। यहोशू 24:32 याकूब द्वारा की गई खरीददारी को दोहराता है जो उत्पत्ति 33:19 में की गई थी। वह यह भी बताता है कि विजय के बाद यूसुफ़ की हड्डियाँ जो मिस्र देश से लाई गई थीं उन्हें याकूब के द्वारा खरीदी गई उसी ज़मीन में दफ़नाया गया था। [9]NIV सही रूप से 1 यूहन्ना 3:9 के लिए यूनानी भाषा के वर्तमान काल का यह कहते हुए प्रयोग करती है वह जो परमेश्वर से जनमा है "लगातार पाप" नहीं करता है; आगे यह कहती है कि "वह पाप नहीं कर सकता।" डोनाल्ड डब्ल्यू. बर्डिक कहता ने कहा है कि यह भाषा का अर्थ यह नहीं है "पाप की पूर्ण रूप से समाप्ति, परन्तु एक ऐसा जीवन जो पाप के द्वारा चित्रित नहीं होता है" (डोनाल्ड डब्ल्यू. बर्डिक, 1 यूहन्ना की पत्री पर नोटस, *दि NIV स्टडी बाइबल*, इडी. केनेथ बार्कर [ग्रैंड रेपिडस, मिशिगन: जोंडरावेन पबलिशिंग हाऊस, 1985], 1911)। [10]लूका 22:32 में युनानी भाषा का शब्द है ἐπιστρέφω *(एपिस्ट्रेफ़ो)*, जिसे NASB ने "पुनः पलटना" अनुवादित किया है। लेकिन, यूहन्ना 12:40 में NASB एक इससे संबंधित शब्द στρέφω *(स्ट्रेफ़ो)* का अनुवाद प्रभु के साथ संबंध में "परिवर्तित होना," अर्थात, "पलट जाना" करती है।